uoe~ ikB~

vknu lDre

R36HVI

प्रस्तुत सूक्त अथर्ववेद से लिया गया है। चावल पक जाने के बाद भात बनता है। उसमें धान कूटने, फटकने, भूसा निकालने और उसे पकाने की कई प्रक्रियाएं होती हैं। इन सबका रूपक अलंकार की सहायता से वर्णन किया गया है। यज्ञ करनेवाले को इस भात के माध्यम से सभी लोक प्राप्त हो जाते हैं, यह कहकर उसकी महिमा बताई गई है।

चक्षुर्मुसलं काम उलूखलम् ।।1।।
दितिःशूर्पमदितिःशूर्पग्राही वातोपावनिक् ।।2।।
अश्वाः कणा गावस्तण्डुला मशकास्तुषाः ।।3।।
इयमेव पृथिवी कुम्भी भवति राध्यमानस्यौदनस्य द्यौरपिधानम् ।।4।।
ऋतं हस्तावनेजनं कुल्योपसेचनम् ।।5।।
ऋतवःपक्तार आर्तवाः समिन्धते ।।6।।
तस्यौदनस्य बृहस्पतिः शिरो ब्रह्म मुखम् ।।7।।
द्यावापृथिवी श्रोत्रे सूर्याचन्द्रमसावक्षिणी
सप्तऋषयः प्राणापानाः ।।8।।
ओदनेन यज्ञवचः सर्वे लोकाः समाप्याः ।।9।।

शब्दार्थाः

चक्षुः= दृष्टि, मुसलम्= मूसल, कामः= इच्छा या अभिलाषा, उलूखलम् = ओखली, दितिः= असुरों की माता, शूर्पम्= सूप, अदितिः= देवों की माता, शूर्पग्राही= सूप पकड़ने वाली, अपाविनक् = भूसे को अलग करने वाला, तण्डुलाः= चावल, मशकाः= मच्छर, तुषाः=भूसा, कुम्भी= स्थाली, राध्यमानस्य= पकनेवाला का, द्यौ=द्युलोक, अपिधानम्= ढक्कन, ऋतम्= पृथ्वी का समस्त जल, अवनेजनम्= प्रक्षालन के लिए, कुल्या= छोटा तालाब या नहर

उपसेचनम्= धोवन धोने के बाद निकलने वाला जल, ऋतवः= वसन्तादि छह ऋतुएँ, पक्तारः= पकानेवाले या रसोइये, आर्तवाः= ऋतु संबंधी दिन और रात, समिन्धते= जलाते हैं, ओदनस्य= भात का, बृहस्पतिः= ऋग्वैदिक देवता, शिरः= शिर/मस्तक, द्यावापृथिवी= आकाश और भूमि, श्रोत्रे = दोनों कान, अक्षिणी= दोनों आँखें, प्राणापानाः= श्वास और निश्वास, यज्ञवचः=यज्ञ करनेवाले, समाप्याः= प्राप्त करते हैं ।

अन्वय

चक्षुः मुसलं काम उलूखलम् ।।1।।

शूर्पम् दितिः शूर्पग्राही अदितिः अपावनिक् वातः ।।2।।

कणा अश्वाः तण्डुलाः गावः तुषाः मशकाः ।।3।।

इयमेव पृथिवी कुम्भी भवति राध्यमानस्य ओदनस्य अपिधानम् द्यौः ।।4।।

हस्तावनेजनं ऋतम् उपसेचनम् कुल्या ।।5।।

पक्तार ऋतवः समिन्धते आर्तवाः ।।6।।

तस्य ओदनस्य शिरः बृहस्पतिः मुखम् ब्रह्म ।।7।।

श्रोत्रे द्यावापृथिवी अक्षिणी सूर्याचन्द्रमसौ प्राणापानाः सप्तऋषयः ।।8।।

यज्ञवचः ओदनेन सर्वे लोकाः समाप्याः ।।9।।

भावार्थ

1. चक्षु है मूसल और इच्छा है ओखली (जिसमें मूसल से धान कूटा जाता है।)
2. सूप है दिति, सूप पकड़नेवाली है अदिति और (भूसे को चावल से) अलग करने वाली है हवा।
3. चावल हैं गायरूप, उसके कण हैं अश्वरूप और भूसा हैं मच्छर रूप।
4. (चावल पकाने के लिए) यही पृथ्वी पात्र बर्तन है और पकाए जा रहे भात (के पात्र) का ढक्कन है द्युलोक।

5. हाथ धोने के लिए ऋत यानी पृथ्वी का समस्त जल है। धोवन यानी धोने के बाद निकला जो जल है वह छोटा–मोटा तालाब है।

6. (चावल को पकानेवाली) रसोइया हैं वसन्तादि छह ऋतुएँ और इन्धन हैं ऋतु से सम्बन्धित दिन और रात।

7. उस ओदन यानी भात का मस्तक है बृहस्पति और मुख है ब्रह्म।

8. (उस ओदन के) दोनों कान हैं द्यावापृथिवी यानी आकाश और भूमि। दोनों आँखें हैं सूर्य और चन्द्रमा। प्राण व अपान वायु सात ऋषि हैं।

9. यज्ञ करने वाले ओदन के माध्यम से समस्त लोक को प्राप्त करते हैं ।

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत।

(क) देवानां माता अदितिः किं करोति ?

(ख) वातः किं करोति तण्डुलस्य ?

(ग) कस्य पिधानं करोति द्यौः ?

(घ) तण्डुलस्य पाककार्यं काः कुर्वन्ति?

(ड.) सूर्यः चन्द्रश्च ओदनस्य कौ स्तः?

(च) ओदनेन कस्मै सर्वे लोकाः समाप्याः ?

2. भिन्नप्रकृतिकं पदं चिनुत –

(क) मुसलम्, उलूखलम्, शूर्पम्, कुल्या, कुम्भी

(ख) दितिः, अदितिः, कुन्ती, अंजनी, शकुनिः

(ग) शिरः, मुखम्, वस्त्रम्, हस्तम्, पादम्,

(घ) बृहस्पतिः, द्युलोकः, पृथ्वी, वरुणः, शनिः

(ड.) यज्ञवचः, ऋतवः, वसन्तः, शिशिरः, ग्रीष्मः

3. कोष्ठकान्तर्गतेषु शब्देषु उपयुक्तां विभक्तिं योजयित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत –

(क) असुराणां .... दितिः शूर्पमस्ति। (मातृ)

(ख) तण्डुलाः .... पच्यन्ते। (कुम्भी)

(ग) राध्यमानस्य ओदनस्य पक्तारः सन्ति .... । (ऋतु)

(घ) .... मुखम् ब्रह्म अस्ति। (ओदन)

(ङ.) प्राणापानाः .... सप्तऋषयः सन्ति। (वायु)

4- LFkyinkU;f/kdR; Ik'ufuekZ.k dq#rA

(क) उलूखले मुसलेन अन्नं कुट्ट्यते।

(ख) तण्डुलाः गावः इव सन्ति।

(ग) हस्तप्रक्षालनार्थम् ऋतम् अस्ति।

(घ) बृहस्पतिः देवानां गुरुः मन्यते।

(ङ.) वेदेषु द्यावापृथिवी युगलदेवरुपेण वर्णितौ।

5. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि मातृभाषया लिखत।

(क) आपने ओखली और मूसल का प्रयोग कहां कहां देखा है ?

(ख) हवा अनाज के साथ क्या क्या करती है ?

(ग) अनाज के भूसे का कौन सा गुण मशक से मिलता है ?

(घ) अपने आस पास आपने किन किन लोगों को रसोइये के रुप में देखा है ?

(ङ.) उपर्युक्त मन्त्रों में शरीर के किन किन अंगों का उल्लेख आया है ?

6. तृच् प्रत्ययान्तानां नवीनानां शब्दानां निर्माणं कुरुत।

यथा – पच् + तृच् – पक्ता

नी + तृच् – ....

कृ + तृच् – ....

दा + तृच् – ....

वच् + तृच् – ....

श्रु + तृच् – ....

7. छत्तीसगढ़ को धान का कटोरा कहा जाता है। अपनी भाषा में धान की रोपाई, निदाई, कटाई के गीतों का संग्रह कीजिए।
8. भात बहुत सारे लोगों का प्रिय भोजन है। कक्षा के बच्चे अपने प्रिय भोजनों की सूची बनाएं और उनके संस्कृत शब्द लिखें।

———000———